CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2025-8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में अभिभावक प्रोत्साहन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

विक्रम सिंह
शोधार्थी
डॉ. शमिन्दर कौर
निर्देशक, शिक्षा शास्त्र विभाग
निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर
डॉ. सुरेन्द्र सिंह सिनसिनवार
सह–निर्देशक, डीन शिक्षा संकाय
महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान
Email: vikram.deshwal127@gmail.com, Mobile-9460926127

……………………………………………………………………

First draft received: 05.11.2025, Reviewed: 09.11.2025
Final proof received: 09.11.2025, Accepted: 20.12.2025

सारांश

इस शोध का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि अभिभावकों द्वारा दिए गए प्रोत्साहन का उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। शिक्षा केवल विद्यालय तक सीमित नहीं होती, बल्कि घर का वातावरण और अभिभावकों का सहयोग भी विद्यार्थी की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रस्तुत अध्ययन में अभिभावक प्रोत्साहन और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का विश्लेषण किया गया है। इसके लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया।

मुख्य शब्द: *प्रोत्साहन , शैक्षिक उपलब्धि , सर्वेक्षण विधि , सांखिकीय विश्लेषण आदि.*

प्रस्तावना

एक छोटे बालक में सम्भावनाओं का भण्डार होता है। उसका विकास इन सम्भावनाओं के आधार पर ही होता है जन्म के बाद सर्वप्रथम वो अपने माता–पिता के सम्पर्क में आता है तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उनसे प्रभावित होता है। अपने वृद्धि काल में अनुकरण की क्रिया के द्वारा अपने अभिभावकों के व्यवहारों का अधिगम करता है। साथ ही अपने मूल्यों, आदर्श और विश्वास को भी अपने माता–पिता से ही सीखता है। अतः माता–पिता की बालक के जीवन में सकारात्मक भूमिका उनके व्यक्तित्व निर्माण में मील का पत्थर साबित हो सकती है। क्योंकि अभिभावक जिस छवि को अन्तः करण में स्थापित करते हैं। बालक भविष्य में वो ही बनने का प्रयास करता है। बालक के व्यक्तित्व निर्माण में अभिभावक प्रोत्साहन का बालक की रूचि सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर प्रभाव पडता है। जब अभिभावकों के द्वारा बालक को सकारात्मक प्रोत्साहन दिया जाता है तो बालक का विकास तीव्र गति से होता है।

बान्डुरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार बालक अपने समाज में रहकर अधिगम प्राप्त करता है तथा समाज द्वारा पुनर्बलन एवं प्रोत्साहन प्राप्त कर प्रभावी अधिगम की ओर अग्रसर होता है। बालक सामाजिक उत्सवों, पर्वो, त्योहारों, संस्कृति, सामाजिक आयोजनों, रिती–रिवाजों आदि में स्वभाविक रूप से भाग लेता है। जिससे उसका सामाजिक अधिगम जीवन पर्यन्त चलता रहता है। वो अपनी शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करता है।

शिक्षा मानव जीवन का आधार है। विद्यार्थी की सफलता केवल उसकी बौद्धिक क्षमता पर निर्भर नहीं करती बल्कि उसके सामाजिक और पारिवारिक वातावरण पर भी निर्भर करती है। अभिभावक बच्चे के पहले शिक्षक होते हैं। उनका प्रोत्साहन, रुचि और सहयोग विद्यार्थी के व्यक्तित्व और शैक्षिक विकास को प्रभावित करता है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी भविष्य की दिशा तय करता है, ऐसे में अभिभावकों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

प्रोत्साहन

हिन्दी भाषा में प्रोत्साहन शब्द का अर्थ होता है। हिम्मत बांधना, आगे बढाना आदि। अंग्रेजी भाषा में (Encourage) का अर्थ होता है वीरता या साहस। इस प्रकार प्रोत्साहन का अर्थ हिम्मत बढाना, उत्साहित करना या उत्साह बढाना आदि से है।

अभिभावक प्रोत्साहन एक प्रकार की शिक्षा सहभागिता है। जिसके माध्यम से बालक के सीखने की प्रक्रिया को गति व दिशा प्राप्त होती है। क्योंकि अभिभावक प्रोत्साहन का प्रभाव बालकों के, संज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक पक्ष पर होता है। अतः अभिभावकों का मुख्य कर्तव्य उनके पालन–पोषण के अतिरिक्त बालकों में अन्तः निहित गुणों का विकास करना है। बालक को प्रोत्साहन परिवार, समाज और अपने साथियों से भी

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि योग्यताओं का मापन करना आवश्यक होता है। शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए व्यापक शैक्षिक उपलब्धि द्वारा समय–समय पर यह ज्ञात किया जाता है कि विद्यार्थियों ने कहाँ तक ज्ञान प्राप्त किया है? तथा किस रूप में प्राप्त किया है? आदि की जाँच करना शैक्षिक उपलब्धि कहलाता है। विद्यार्थियों में प्रगति ज्ञात करने हेतु विकसित

डम्बेल के अनुसार– "विद्यार्थियों के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलताऐं एवं क्षमता का मापन करने हेतु अपनायी गई विधि, प्रक्रिया, व्यूह रचना, उपलब्धि परीक्षण कहलाती है तथा इस परीक्षण के माध्यम से प्राप्त दत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्गत आते है।"

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

यह अध्ययन यह जानने में सहायक होगा कि अभिभावकों का सहयोग विद्यार्थियों की उपलब्धि को कैसे प्रभावित करता है।

इससे शिक्षकों को अभिभावकों से बेहतर सहयोग प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

विक्रम सिंह
डॉ. शमिन्दर कौर
डॉ. सुरेन्द्र सिंह सिनसिनवार

यह अध्ययन शैक्षिक नीति निर्माण में उपयोगी सिद्ध होगा।

इससे विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं पर अभिभावक प्रोत्साहन का अध्ययन करना।
2. शहरी व ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अभिभावक प्रोत्साहन का अध्ययन करना।
3. राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के अभिभावक प्रोत्साहन का अध्ययन करना
4. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना
5. शहरी व ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
6. राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
7. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियें में अभिभावक प्रोत्साहन व शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं में अभिभावक प्रोत्साहन के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. शहरी व ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अभिभावक प्रोत्साहन के मध्यमानों में कोई सार्थक नही है।
3. राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अभिभावक प्रोत्साहन के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. शहरी व ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक नहीं है।
6. राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
7. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियें की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिभावक प्रोत्साहन में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। इसमें भरतपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों को लिया गया।यादृच्छिक विधि से चयनित न्यादर्श पर समस्या के अनुसार निश्चित चरों पर अनुसंधान किया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन में पाया गया कि जिन विद्यार्थियों को अभिभावकों से अधिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक थी।

अभिभावक प्रोत्साहन के स्तर पर छात्र–छात्राओं में समानता पाई जाती **है**।

अभिभावक प्रोत्साहन का स्तर शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच लगभग समान है।

विद्यालय के प्रकार–राजकीय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों को अभिभावकों से प्राप्त प्रोत्साहन के स्तर पर कोई विशिष्ट प्रभाव नहीं पड़ता। दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों को समान रूप से अभिभावकीय समर्थन एवं प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है।

शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ता।

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का औसत उपलब्धि स्कोर राजकीय विद्यालयों की अपेक्षा उल्लेखनीय रूप से अधिक है।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिभावक प्रोत्साहन के बीच कोई सार्थक या महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान नहीं है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य में निष्कर्ष के आधार पर यह स्पष्ट है कि बालको की शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्ति में अभिभावक प्रोत्साहन अत्यंत महत्त्वपूर्ण कारक है साथ ही वह वातावरण भी जहाँ बालक निवास करते हुए अध्ययन करता है। निष्कर्ष इंगित करते हैं कि विद्यार्थियों की उपलब्धि मुख्यतः उनके व्यक्तिगत अध्ययन प्रयास, विद्यालयीन वातावरण, अध्यापन पद्धति एवं स्वप्रेरणा पर अधिक निर्भर करती है, न कि अभिभावक प्रोत्साहन के प्रत्यक्ष प्रभाव पर। लेकिन यह भी सही है कि शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करना हर बालक चाहता है किंतु उचित देख–भाल, उचित प्रोत्साहन एवं दायित्वों की कमी से इनमें बाधाएँ आती है। इन्हें दूर करने की आवश्यकता है।

अधिक प्रोत्साहन पाने वाले विद्यार्थी बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

अभिभावकों की रुचि विद्यार्थी के आत्मविश्वास को बढ़ाती है।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षकों के द्वारा अभिभावकों को जागरूक करना चाहिए।

अभिभावक–शिक्षक बैठकें नियमित होनी चाहिए।

घर का वातावरण अध्ययन के अनुकूल बनाया जाना चाहिए।

अध्ययन की सीमाएँ

अध्ययन केवल भरतपुर जिले तक सीमित था।

नमूना आकार 300 सीमित था।

संदर्भ सूचि

- Best, J.W. (2008) - Research in Education.
- Koul, L. (2014) - Methodology of Educational Research.
- NCERT (2020) - Educational Psychology.
- अग्रवाल, जे.सी. (2018). शैक्षिक मनोविज्ञान. दिल्लीः आर्य बुक डिपो।
- शर्मा, आर.ए. – ''शिक्षा अनुसंधान'', आर.लाल बुक डिपो,मेरठ,1999